पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

खण्ड–XXX अंक–09 15 मई, 2025

भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती।।
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू।।
गुन अवगुन जानत सब कोई। जो जोहि भाव नीक तेहि सोई।।

भले और बुरे अपनी–अपनी करनी के अनुसार सुन्दर, यश और अपयश की सम्पत्ति पाते हैं। अमृत, चन्द्रमा, गंगाजी और साधु एवं विष अग्नि, कलियुग के पापों की नदी अर्थात् कर्मनाशा और हिंसा करने वाला व्याध, इनके गुण–अवगुण सब कोई जानते हैं, किन्तु जिसे जो भाता है, उसे वही अच्छा लगता है। **–श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड/4,5)**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2025/399259 दिनांक 05.05.2025 के अनुसार **प्रो. नितिन यादव** ने 01.05.2025 से संस्थान के भौतिकी विभाग मे सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-13ए1 में सहायक प्रोफेसर, ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2025/399262 दिनांक 05.05.2025 के अनुसार **प्रो. गार्गी गिरीश शर्मा** ने 01.05.2025 से संस्थान के भौतिकी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-13ए1 में सहायक प्रोफेसर, ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2025/399264 दिनांक 05.05.2025 के अनुसार **प्रो. राणा नन्दी** ने 01.05.2025 से संस्थान के भौतिकी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-13ए1 में सहायक प्रोफेसर, ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2025/398600 दिनांक 02.05.2025 के अनुसार **डॉ. सेमान्ती बासु** ने 29.04.2025 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में अंग्रेजी भाषा अनुदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

छात्रावास हाउस में अध्यक्षों की नियुक्ति

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/AREG/4(3)/2025/397790 दिनांक 30.04.2025 के अनुसार निदेशक महोदय ने तत्काल प्रभाव से निम्नलिखित संकाय सदस्यों को छात्रावास हाउस के अध्यक्ष (हाउस मास्टर) के रूप मे नियुक्त किया है:–

क्र सं.	संकाय सदस्य का नाम	छात्रावास का नाम
1.	प्रो. विवेक कुमार ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र	गिरनार छात्रावास
2.	प्रो. राजेन्द्र एस. ढाका भौतिकी विभाग	शिवालिक छात्रावास

आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता श्रृंखला

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली अस्पताल से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार आई.आई.टी. दिल्ली अस्पताल और अकादमिक आउटरीच कार्यालय की पहल 'आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता श्रृंखला' अपने तीसरे सत्र में साधारण लेकिन उपचार योग्य दृष्टि विकार "मोतियाबिंद" पर ज्ञानवर्धक और परस्पर वार्ता के लिए आपको आमंत्रित करते हुए प्रसन्न है। इसकी रोकथाम, लक्षण और नवीनतम उपचार के बारे में विशेषज्ञ से जानने के लिए हमसे जुड़ें।

वक्ताः–

डॉ. अमित खोसला

वरिष्ठ सलाहकार एवं सह–अध्यक्ष, नेत्र रोग विभाग

सर गंगा राम अस्पताल, नई दिल्ली

विषयः "मोतियाबिंद को समझनाः कारण, लक्षण और आधुनिक उपचार विकल्प"

चर्चा के मुख्य बिंदुः

- मोतियाबिंद क्या है? – वे कैसे विकसित होते हैं और दृष्टि को कैसे प्रभावित करते हैं।
- संकेतों को पहचानना – शुरुआती लक्षण और कब मदद लेनी चाहिए।
- जोखिम कारक और रोकथाम – अपनी आँखों की सुरक्षा के लिए जीवनशैली की आदतें।
- उन्नत उपचार विकल्प – पारंपरिक सर्जरी से लेकर अत्याधुनिक लेजर तकनीक और प्रीमियम इंट्राओकुलर लेंस (IOLs) तक।

- प्रश्नोत्तर सत्र – विशेषज्ञ से अपने प्रश्नों के उत्तर पाएँ।

दिनांकः 27 मई 2025 (मंगलवार)

समयः 4.00 – 5.30 अपराह्न

स्थानः सेमिनार हॉल

यह सत्र छात्रों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और देखभाल करने वालों (केयरगिवर) के लिए बनाया गया है जो नेत्र स्वास्थ्य, चिकित्सा विज्ञान या प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य देखभाल के संबंध में रुचि रखते हैं।

पंजीकरण विवरणः –

अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कृपया दिए गए लिंक पर क्लिक करके पहले पंजीकरण कराएंः–

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfuws8pDeIm9uBVguy18u8l2wRhir3Q3aVa2a8XvwPqR6-6iw/viewform?usp=header

हम इस ज्ञानवर्धक चर्चा में आपकी भागीदारी की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

आरोग्यम् परमम् भाग्यम्

तांबे के बर्तनों में खाना–पीना कितना उपयोगी

आपने अकसर सुना होगा कि पूजा–पाठ करने के दौरान तांबे के बर्तनों का प्रयोग करना चाहिए। दरअसल, ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि तांबा सौ प्रतिशत शुद्व धातु होती है और इसे शुभ भी माना जाता है। इसी तरह से यह भी सुना और पढ़ा होगा कि बीते कुछ सालों से स्वास्थ्य विशेषज्ञ कह रहे हैं कि तांबे के बर्तन में पानी पीना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। हालांकि यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि तांबे के बर्तनों का प्रयोग सदियों पुराना है। पहले घर में इनका प्रयोग बहुतायत में होता था, लेकिन धीरे–धीरे ये घर से बाहर होते गए। अब एक बार फिर से तांबे के बर्तनों के प्रयोग पर जोर दिया जा रहा है। इसका कारण यह है कि इसमें सेहत के लिए लाभकारी अनेक गुण छिपे हैं। यही वजह है कि इन दिनों बड़े होटलों और रेस्टोरेंट्स में भी तांबे के बर्तनों का प्रयोग किया जा रहा है।

आयुर्वेद के अनुसार तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी (ताम्रजल) पीने से बहुत सी बीमारियों से राहत मिलती है। आयुर्वेद में ताम्रजल का बहुत महत्व बताया गया है। यह शरीर में कफ, पित्त और वात के संतुलन को सही रखता है। तांबा ऐसा खनिज तत्व है, जिसकी शरीर में थोड़ी–सी मात्रा बहुत लाभ करती है। ताम्रजल पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है और यह एक प्राकृतिक एंटीआक्सीडेंट का काम करता है।

हाल ही में हुए शोध–अध्ययनों के अनुसार, इसके पीने से शरीर में असमय झुर्रियां नहीं पड़ती हैं। तांबे की एक विशेषता है कि यह 99 प्रतिशत बैक्टीरिया को समाप्त करने की क्षमता रखता है। यही कारण है कि ताम्रजल गर्मी के दिनों में होने वाली कई प्रकार की बीमारियों से सुरक्षित रखता है। तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पीने से थायराइड हार्मोन का संतुलन सही रहता है, विभिन्न प्रकार के संक्रमण से शरीर सुरक्षित रहता है, हीमोग्लोबिन का स्तर नियंत्रित रहता है, कोलेस्ट्रोल सही रहता है, सर्दी–जुकाम, पेट संबंधी समस्याओं से राहत मिलती है, यह हड्डियों में मजबूती लाता है और सबसे बड़ी बात, रक्तचाप को नियंत्रित रखता है। तांबे के बर्तनों में खाना पकाने से भी बहुत लाभ मिलता है। हालांकि इस संदर्भ में यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि खट्टी चीजो को पकाने के लिए इसका प्रयोग न करें अर्थात् जिनमें टमाटर, खटाई, सिरका आदि डालना हो, उन खाद्य पदार्थों को इसमें न पकाएं। अगर ऐसी चीजों को पकाना है तो पालिश किए हुए तांबे के बर्तनों का प्रयोग करना चाहिए।

यह है बहुत फायदेमंद

आयुर्वेद के अनुसार, हमारे शरीर में बहुत–सी धातुएं विद्यमान है और इनकी मात्रा भी काफी अधिक होती है, लेकिन तांबा ऐसी एक धातु है, जो काफी कम मात्रा में पाई जाती है। इसीलिए तांबे के बर्तनों में खाना–पीना शरीर के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। ताम्रजल का प्रयोग सेहत को दुरूस्त रखने में बहुत सहायक है। रात में तांबे के बर्तन में पानी भरकर सुबह पीना और सुबह भरकर शाम को पीना लाभकारी होता है। यह हमारे मेटाबालिज्म को सही रखने, रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, दीर्घायु बनाने और शरीर में चुस्ती–फुर्ती लाने में भी सहायक है। तांबा शरीर में मौजूद हानिकारक तत्वों को आसानी से बाहर निकालने में मदद करता है। हालांकि एक बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि तांबे के बर्तनों से दूध या दही का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अर्थात तांबे के बर्तन में दूध–दही नहीं रखना चाहिए और न ही पीना चाहिए।

तांबा पर्यावरण के लिए भी एक अनुकूल धातु है अर्थात् इको फ्रेंडली है और सौ प्रतिशत रिसाइकिल हो जाता है। यही कारण है कि घर की साज–सज्जा की वस्तुओं से लेकर बाथरूम तक में तांबे से बनी चीजों का प्रयोग इन दिनों चलन में है। यही नहीं, बिजली के उपकरणों में भी तांबे का प्रयोग वर्षों से होता आ रहा है और आज भी लोगों की पहली प्राथमिकता होती है कि तांबायुक्त चीजों की ही खरीदारी करें क्योंकि तांबा ऊष्मा का एक बेहतरीन सुचालक है। विशेषज्ञों का कहना है कि खाना पकाने के लिए तांबे के बर्तनों का प्रयोग करते समय आंच धीमी होनी चाहिए। धीमी आंच के बावजूद तांबे के बर्तनों में खाना बहुत जल्दी पकता है। अगर तांबे के बर्तनों में पालिश है तो इनमें खाना बनाने में न तो कोई वस्तु चिपकेगी और न ही खट्टी चीजों के प्रयोग से कोई नुकसान होगा। तांबे के बर्तनों के प्रयोग से ई.कोली जैसे घातक बैक्टीरिया को दूर रखा जा सकता है। यह पाचनतंत्र को सही रखने के साथ ही दिमाग को भी सक्रिय रखने में मदद करता है। यह त्वचा को कांतिवान बनाए रखने में भी सहायक है।

–साभारः दैनिक जागरण
दिनांक 4 अप्रैल, 2025

अध्यात्म – सात्विक स्वभाव अपनाएं

प्राचीन चरक संहिता में लिखा है कि मानव–शरीर के लिए जो भोज्य पदार्थ हैं, वही औषधि हैं और जो औषधि हैं, वही भोज्य पदार्थ हैं। वे लिखते हैं कि अन्न ही प्रणियों के लिए प्राण है और अन्न के लिए ही सभी जीवन आग्रहशील हैं। वर्ण, सुस्वरता, जीवन प्रतिभा, तुष्टि, पुष्टि, बल, मेधा तथा सुख सभी अन्न के अधीन हैं। आजीविका के लिए लौकिक कार्य, स्वर्गलाभ के लिए वैदिक अनुष्ठान तथा मुक्ति की प्राप्ति के लिए जो पारमार्थिक क्रियायें की जाती हैं, वे सभी अन्न पर आधारित हैं। यही कारण है कि निष्कर्ष रूप से यह कह दिया गया कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मूल रूप से व्यक्ति के आरोग्य जीवन पर आधारित है और आरोग्य जीवन अन्न पर आधारित हैं।

अन्न की ऐसी महत्ता का अनुभव उपनिषद्कार ऋषि पहले से ही करते रहे हैं। इसीलिए तैत्तरीय उपनिषद में कहा गया है कि अन्न से ही स्थावर–जंगमरूप प्रजा उत्पन्न होती है और पुनः जीवन की समाप्ति पर अन्न में ही लीन हो जाती हैं, क्योंकि अन्न ही प्राणियों में अग्रज है। अन्न ही प्राण है, अन्न ही ब्रह्म है। महर्षि वरूण ने परब्रह्म के स्वरूप की जिज्ञासा करने वाले अपने पुत्र भृगु से कहा था कि ''हे भृगु! अन्न ब्रह्म है, ऐसा जानो क्योंकि इस अन्न से ही प्राणियों का सृजन होता है। अन्न से ही प्राणी जीवित रहते हैं, बाद में मरणोन्मुख होकर इसी में विलीन हो जाते हैं। इसलिए अन्य ब्रह्म है–ऐसा निश्चय करो''।

अन्न की ऐसा महत्ता का अनुभव करके ही एक अन्य विद्वान ने लिखा है कि इसी अन्न के शुद्धि पूर्वक ग्रहण करने से ही व्यक्ति आजीवन शुद्ध रहता है और जीवन–शुद्धि से ही इसे परमात्म पथ पर अग्रसर होने की बुद्धि मिलती हैं, जिससे परम कल्याण की प्राप्ति होती हे। इसी निमित्ति से वे कहते हैं कि आहार शुद्धि पर ही जीवन की शुद्धि निर्भर है–''आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः।''

श्रीमद् भागवद् गीता में सतोगुणी, रजोगुण और तमोगुणी रूप से तीन प्रकार के मनुष्यों का कथन किया गया है और कहा गया है कि इन गुणों वाले व्यक्ति अपनी–अपनी गुणवृत्ति के अनुसार अपने लिए अन्न ग्रहण करते हैं। जो अन्न आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख तथा प्रीतिवर्धक हैं एवं सहज रूप से मन को प्रसन्न करने वाला है उसे सतोगुणी प्रवृत्ति के व्यक्ति ग्रहण करते हैं।

इसी प्रकार से जो अन्न कटु, कसैला, खट्टा, तीता, रूखा तथा अधिक उष्ण होता है जिससे मन में उद्विग्नता आती है, उसे रजोगुणी व्यक्ति ग्रहण करता है। जो अन्न अपचकर, रस–रहित दुर्गन्धयुक्त, जूठा एवं अपवित्र होता है वह तामसीवृत्ति के व्यक्ति को रूचिकर होता है।

इसी प्रकार से यह स्पष्ट ज्ञात किया जा सकता है कि जो सतोगुणी प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं, वे उसी अन्न को ग्रहण करते हैं, जिससे केवल उदर की पूर्ति ही नहीं होती, अपितु जिसे ग्रहण करने से मन में तृप्ति आती है और चित्त प्रसन्न तथा शान्त होकर जीवन के उस उद्देश्य की पूर्ति की ओर प्रवृत होता है, जिस उद्देश्य को पाने में ही जीवन की सार्थकता है। इसके विपरीत रजोगुणी तथा तमोगुणी प्रवृत्ति के व्यक्ति जिस अन्न का आहार ग्रहण करते हैं वह ऐसा अन्न होता है जिसे ग्रहण करने से उनके मन में अशान्ति, उद्वेग तथा विभ्रम की स्थिति आती है और इसी से वे इस संसार के भोग पदार्थों को ही परम प्राप्तव्य मानकर इन्हीं की प्राप्ति में रच–बस जाते हैं तथा जीवन की शुचिता एवं लक्ष्य प्राप्ति से दूर होकर संसार के दुःखो का भोग करने को विवश होते हैं।

इसलिए यह विचारणीय है कि मनुष्य को किस प्रकार के अन्न का आहार करना चाहिए और उसे ग्रहण करने के पूर्व उसकी शुद्धता का ध्यान किस रूप में रखना चाहिए। विशेषकर आज के जीवन के परिप्रेक्ष्य में ऐसा विचार करना और भी आवश्यक है, क्योंकि आज अधिकतम संख्या में लोग आहार–शुद्धि की ओर या तो ध्यान नहीं देते अथवा उसे केवल उदरपूर्ति का साधन मान कर चाहे जैसा आहार ग्रहण करते रहते हैं और इसके फलस्वरूप अपने जीवन को विकारी बना लेते हैं।

आहार–शुद्धि का विचार करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति सर्वप्रथम तो अपने द्वारा श्रम से अर्जित अन्न का ही आहार ग्रहण करें। किसी भी प्रकार से भ्रष्टाचारण द्वारा जो अन्न अर्जित किया गया है, उसकी आहार कदापि न ग्रहण करें क्योंकि ऐसा करने से व्यक्ति का मन विकारग्रस्त हो जाता है। इसी भांति जिस अन्न का आहार ग्रहण किया जाता है, वह स्वच्छ हो, उसका निर्माण करने वाला तन से स्वच्छ तथा मन से प्रसन्न हो। वह आहार का निर्माण पवित्रतापूर्वक कर रहा हो एवं जिसे वह आहार दिया जाना है, उसके प्रति आहार निर्माण करने वाले के मन में स्नेह तथा उदारता का भाव हो। आहार ग्रहण करने वाला पवित्र मन से अन्न ग्रहण करने के लिए बैठे तथा अन्नाहार लेने से पूर्व उसे उस परमेश्वर के लिए अवश्य अर्पित करें, जिसकी कृपा से उसे यह आहार प्राप्त हुआ है। क्योंकि इस विशाल संसार में लाखों–करोड़ों दीन–हीनों के रहते हुए भी यदि उसे स्वच्छ, सात्विक और पेट भर अन्नाहार मिल रहा है, तो यह उसी परमेश्वर की कृपा का ही फल है।

जब भी व्यक्ति अन्नाहार करने के लिए बैठे, तब ऐसा करते समय न उसके मन में क्रोद्ध हो, न ईर्ष्या हो, न भय हो और न ही हड़बड़ी में चलते–चलते व खड़े–खड़े आहार ग्रहण करें। ऐसा करता हुआ व्यक्ति अपने उदर की पूर्ति भले ही कर ले किन्तु आहार ग्रहण करने पर जो एक विशेष प्रकार की तृप्ति मिलती है, उससे वह वंचित हो जाएगा। इसी तरह से जहाँ आहार किया जाना है, वह स्थान साफ–स्वच्छ हो, खाने के पात्र भली से निर्मल किए गए हों, किसी का उच्छिष्ट भोजन न लिया गया हो और न ही अन्न किसी दूसरे प्रकार से अपवित्र हो। आहार ग्रहण करने वाला व्यक्ति जब तक अन्न ग्रहण करता रहे, तब तक शान्त मन होकर परमात्मा के प्रति कृतज्ञता के भाव से ही भरा रहे।

इसके विपरीत जब व्यक्ति आहार की शुद्धता पर ध्यान नहीं देता और एक–दूसरे का जूठन खाने से परहेज नहीं करता, तब ऐसा करता हुआ वह अपने आपको चाहे जितना संयत और प्रसन्न रखने का प्रयत्न करें, कहीं न कहीं, उसके मन में अपवित्र तथा जूठे आहार ग्रहण करने की ग्लानि बनी ही रहती है। फल यह होता है कि मन में खिन्नता, चिड़चिड़ाहट एवं क्रोध का भाव अनजाने ही आ जाता है, जिससे मनुष्य की सात्विक वृत्ति पर विपरीत असर पड़ता है और उसकी बुद्धि भी विकृत हो जाती है। आज के प्रसंग में तो इस व्यवस्था को देखा जा सकता है, जिसमें बड़े–बड़े आयोजनों में जो आहार बनाने की प्रक्रिया है तथा जिस रूप में बिना स्वच्छता तथा पवित्रता का विचार किए खडे–खड़े भीड़ में उसे ग्रहण किया जा रहा है, उससे मानसिक विकृति ही उपज रही है। इस व्यवस्था के फलस्वरूप मन की अस्थिरता और बुद्धि की विकृति ही निरन्तर समाज में बढ़ती जा रही है।

इसलिए आहार शुद्धि पर जीवन की शुद्धि निर्भर है–इस कथन के निहितार्थ को समझकर व्यक्ति को अपने लिए आहार ग्रहण करने की प्रक्रिया निर्धारित करनी चाहिए तथा शुद्ध, सात्विक एवं संयत रूप से आहार ग्रहण कर मन की प्रीति एवं जीवन के सात्विक स्वभाव की ओर बढ़ना चाहिए। ऐसा होने से व्यक्ति वर्तमान जीवन में शान्त, सुस्थिर और प्रसन्न रहता है तथा इसी भाव से अपने परलौकिक जीवन में श्रेय प्राप्त करने का अधिकारी बनता है क्योंकि लौकिक जीवन की सात्विक वृत्ति ही परलोक जीवन की सफलता की सीढ़ी है।

–डॉ. गदाधर त्रिपाठी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY DELHI

प्रशासनिक अधिकारियों के दैनिक सरकारी कामकाज में सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली संक्षिप्त आदेशात्मक टिप्पणियाँ

(Brief important notings being used by Administrative Officers in their daily routine official work)

अंग्रेजी	हिन्दी
Action may be taken as proposed.	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
All concerned should note carefully.	सभी संबंधित व्यक्ति इसे ध्यान से नोट कर लें।
Application is rejected.	प्रार्थना–पत्र अस्वीकृत किया जाता है।
Approved.	अनुमोदित।
Approved as a very special case. This should not, however be Quoted as a precedent.	एक विशेष मामला मानते हुए अनुमोदित किया जाता है, किन्तु आगे उदाहरण के रूप में इसका उल्लेख न किया जाए।
Wait further report.	आगे और विवरण की प्रतीक्षा कीजिए।
Await reply.	उत्तर की प्रतीक्षा करें।
Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें।
Draft is concurred in.	प्रारूप पर सहमति दी जा रही है।
Draft may not be issued.	अब प्रारूप जारी करने की आवश्यकता नहीं है।
Draft reply on the lines suggested above may be Put up.	उपरोक्त सुझावों के आधार पर उत्तर का मसौदा तैयार कीजिए।
Enquire into the case and report early.	मामले की जांच करें और शीघ्र रिपोर्ट दें।
Enquiry be completed and its report submitted at an Early date.	जांच पूरी की जाए और रिपोर्ट जल्दी प्रस्तुत की जाए।
Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
Fix a date for meeting.	बैठक के लिए तारीख नियत करें।
Give top priority to this work.	इस कार्य को परम अग्रता दें।
I agree.	मैं सहमत हूं।

अंग्रेजी	हिन्दी
I agree with 'A' above.	मैं उपर्युक्त 'क' से सहमत हूं।
I disagree.	मैं सहमत नहीं हूं।
I fully agree with office note	मैं कार्यालय की टिप्पणी से पूर्णतया सहमत हूं।
Inform accordingly.	तदनुसार सूचित किया जाए।
Issue as amended.	यथासंशोधित जारी किया जाए।
Issue reminder urgently.	तुरन्त अनुस्मारक भेजिए।
Issue today.	आज ही भेज दिया जाए।
Issue warning.	चेतावनी दी जाए।
Kindly see it for approval.	कृपया इसे अनुमोदन के लिए देखें।
May file.	फाईल कर दिया जाए।
No assurance in the matter can be given at this stage.	इस मामले में इस समय कोई आश्वासन नहीं दिया जा सकता है।
Order may be issued.	आदेश जारी कर दिया जाए।
Office may note it carefully.	कार्यालय इसे सावधानी से नोट कर लें।
Permitted.	अनुमति दी जाती है।
Please circulate and file.	कृपया सभी को दिखाकर फाइल कर दें।
Please discuss.	आकर चर्चा कर लें।
Please fleg the relevent papers.	कृपया संगत कागजातों पर पर्चियाँ लगा दें।
Please issue necessary notification.	कृपया आवश्यक अधिसूचना जारी करें।
Please make a special note of this Decision.	कृपया इस निर्णय को विशेष रूप से नोट करे।
Please prepare a precis of the case.	कृपया मामले की संक्षेपिका तैयार करें।

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com